IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, January 2022
Impact Factor: 6.252

पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागरूकता (भारत के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. सुमन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष : भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी, जनपद, महोबा (उ० प्र०)
drsumansinghs@gmail.com

सारांश :

मानव और पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। मनुष्य अपने जीवन के लिए वायु, जल, भूमि, वन, पशु-पक्षी तथा प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहता है। प्रकृति हमें जीवन प्रदान करती है, किंतु आधुनिक विकास, औद्योगीकरण, शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण निरंतर प्रदूषित होता जा रहा है। वनों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा, जलवायु परिवर्तन तथा जैव विविधता का ह्रास आज विश्व के सामने गंभीर चुनौतियाँ बन चुकी हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल कानूनों और सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है। पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति को प्रकृति के महत्व, संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के प्रति जागरूक बनाती है। यह शिक्षा मनुष्य में जिम्मेदारी, अनुशासन और पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। वर्तमान समय में पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि स्वस्थ पर्यावरण के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है।

मुख्य शब्द : तकनीकी, नवाचार, जन - भागीदारी, समानता, समृद्ध, रचनात्मकता, पर्यावरणीय शिक्षा, प्रदूषण, विविधता, संतुलित, सकारात्मक, सपना, सतत विकास, हरित ऊर्जा, नगरीकरण, औद्योगीकरण, स्वच्छ भारत मिशन, पर्यावरण संरक्षण, अमृत योजना, दोहन, आत्मनिर्भरता और विशेषताएं आदि |

अध्ययन का उद्देश्य :

* पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागरूकता की अवधारण को स्पष्ट करना |
* पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागरूकता के द्वारा पर्यावरणीय चुनौतियों का विश्लेषण करना |
* पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागरूकता के द्वारा पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान का विश्लेषण करना |

अध्ययन की प्रविधि :

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, January 2022 Impact Factor: 6.252

इस अध्ययन हेतु तथ्य द्वितीय स्रोतों जैसे पुस्तकों, जर्नलों, समाचार - पत्र, शासकीय व अशासकीय स्तर पर प्रकाशित पत्र - पत्रिकाओं तथा विभिन्न वेबसाइटों के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं | यह अध्ययन अधिकांशतः व्याख्यात्मक एवं वर्णनात्मक है जबकि यथास्थान पर मौलिकता का समावेश भी है |

प्रस्तावना :

भारत अति प्राचीन एवं गौरवशाली सभ्यता एवं संस्कृति वाला देश है | भारत की मुख्य भूमि का विस्तार उत्तर में विशाल हिमालय से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर के शीर्ष तक तथा पूर्व में अरूणांचल प्रदेश से लेकर पश्चिम में कच्छ की खाड़ी तक है | भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवां बड़ा देश है | जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में इसका प्रथम स्थान हो गया है | भारत का कुल क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.42 प्रतिशत है, परंतु यहां संपूर्ण मानव जाति का लगभग 17.5 प्रतिशत भाग निवास करता है | भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है, जबकि भारत की कुल जनसंख्या लगभग 146 करोड़ से अधिक है, जो इसे दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बनाती है | भारत की मुख्य भूमि का विस्तार उत्तर से दक्षिण 3,214 किमी. तथा पश्चिम से पूर्व तक 2,953 किमी. है | भारत की स्थलीय सीमा 15,200 किमी. और समुद्रतटीय सीमा 7,516.6 किमी. है | भारत एक ऐसा देश है जो न केवल प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का ध्वजवाहक है, बल्कि आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और विकास के क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति कर रहा है । स्वतंत्रता के बाद से भारत ने गरीबी, अशिक्षा और पिछड़ेपन जैसी कई चुनौतियों को पार कर एक मजबूत अर्थव्यवस्था की नींव रखी है । आज भारत "विकसित भारत 2047" के लक्ष्य की ओर अग्रसर है — अर्थात् ऐसा भारत जो आत्मनिर्भर, समृद्ध, न्यायपूर्ण, और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली हो, परंतु विकास की इस यात्रा के साथ एक गंभीर प्रश्न जुड़ा है कि क्या विकास की कीमत पर पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है ?

तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, परिवहन, और ऊर्जा उपभोग ने भारत के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव डाला है । परिणामस्वरूप वायु, जल और भूमि प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता का ह्रास और जल संकट जैसी विकट समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं । ऐसे में पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति को प्रकृति के महत्व, संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के प्रति जागरूक बनाती है। यह शिक्षा मनुष्य में जिम्मेदारी, अनुशासन और पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। वर्तमान समय में पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि स्वस्थ पर्यावरण के बिना मानव जीवन की कल्पना संभव नहीं है।

पर्यावरणीय शिक्षा का अर्थ :

पर्यावरणीय शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति को पर्यावरण, उसकी समस्याओं तथा उनके समाधान के विषय में ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि व्यवहार में परिवर्तन लाना भी है। यह शिक्षा व्यक्ति को प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के अनुसार पर्यावरणीय शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति और समाज को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाकर समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक ज्ञान, कौशल तथा दृष्टिकोण प्रदान करती है।

पर्यावरणीय शिक्षा के उद्देश्य :

पर्यावरणीय शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं—

1. पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना :

लोगों को पर्यावरणीय समस्याओं जैसे प्रदूषण, जल संकट, ग्लोबल वार्मिंग आदि के प्रति सचेत करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

2. ज्ञान प्रदान करना :

पर्यावरण के विभिन्न घटकों—जल, वायु, मिट्टी, वनस्पति तथा जीव-जंतुओं—के बारे में वैज्ञानिक जानकारी देना।

3. संरक्षण की भावना विकसित करना :

प्राकृतिक संसाधनों के उचित उपयोग तथा संरक्षण की आदत विकसित करना।

4. समस्या समाधान की क्षमता विकसित करना :

व्यक्ति को पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान हेतु व्यावहारिक उपायों की जानकारी देना।

5. सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना :

नागरिकों में यह भावना उत्पन्न करना कि पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता :

आज पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

1. बढ़ता प्रदूषण :

औद्योगिक इकाइयों, वाहनों और रासायनिक पदार्थों के कारण वायु, जल और भूमि प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। इससे मानव स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है।

2. प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन :

मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग कर रहा है। इससे संसाधनों की कमी उत्पन्न हो रही है।

3. जलवायु परिवर्तन :

ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ रहा है, हिमनद पिघल रहे हैं तथा प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं।

4. जैव विविधता का संकट :

वनों की कटाई और प्रदूषण के कारण अनेक जीव-जंतु विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच गए हैं।

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, January 2022 Impact Factor: 6.252

5. भविष्य की पीढ़ियों की सुरक्षा :

यदि आज पर्यावरण संरक्षण नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ जल, वायु और सुरक्षित वातावरण नहीं मिल पाएगा।

पर्यावरणीय जागरूकता का अर्थ :

पर्यावरणीय जागरूकता का अर्थ है पर्यावरण के महत्व को समझना तथा उसके संरक्षण के प्रति सचेत और सक्रिय रहना। यह जागरूकता व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनाती है। जब लोग अपने कार्यों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने लगते हैं, तब वे प्रकृति के संरक्षण की दिशा में सकारात्मक कदम उठाते हैं।

पर्यावरणीय जागरूकता के प्रमुख माध्यम :

1. शिक्षा संस्थान :

विद्यालय और महाविद्यालय पर्यावरणीय जागरूकता फैलाने के प्रमुख केंद्र हैं। पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करके विद्यार्थियों को जागरूक बनाया जा सकता है।

2. जनसंचार माध्यम :

रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, सोशल मीडिया तथा इंटरनेट के माध्यम से पर्यावरण संबंधी संदेश लोगों तक पहुँचाए जाते हैं।

3. अभियान और रैलियाँ :

वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान तथा पर्यावरण रैलियाँ लोगों में जागरूकता बढ़ाती हैं।

4. गैर-सरकारी संगठन :

अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य कर रही हैं। वे लोगों को प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान करती हैं।

5. सरकार की योजनाएँ :

सरकार विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाती है।

पर्यावरणीय समस्याएँ और उनका प्रभाव :

1. वायु प्रदूषण :

वाहनों, कारखानों और धुएँ के कारण वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। इससे श्वसन रोग, अस्थमा तथा फेफड़ों की बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

2. जल प्रदूषण :

नदियों और तालाबों में औद्योगिक अपशिष्ट तथा गंदगी डालने से जल प्रदूषित हो रहा है। इससे जलजनित रोग फैलते हैं।

3. भूमि प्रदूषण :

रासायनिक उर्वरकों और प्लास्टिक कचरे के कारण भूमि की उर्वरता कम हो रही है।

4. ध्वनि प्रदूषण :

वाहनों, मशीनों और तेज ध्वनि वाले उपकरणों से ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है, जिससे मानसिक तनाव और स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

5. जलवायु परिवर्तन :

तापमान वृद्धि, अनियमित वर्षा तथा प्राकृतिक आपदाएँ जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम हैं।

पर्यावरण संरक्षण में शिक्षा की भूमिका :

पर्यावरण संरक्षण में शिक्षा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, सोच और व्यवहार में परिवर्तन लाती है। इसके माध्यम से लोग पर्यावरणीय समस्याओं को समझते हैं और उनके समाधान हेतु कार्य करते हैं।

1. विद्यार्थियों में जिम्मेदारी की भावना :

विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा से विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी विकसित होती है।

2. व्यवहार परिवर्तन :

लोग प्लास्टिक का कम उपयोग, जल संरक्षण तथा स्वच्छता जैसे कार्यों को अपनाने लगते हैं।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण :

पर्यावरणीय शिक्षा वैज्ञानिक सोच विकसित करती है, जिससे लोग समस्याओं का तार्किक समाधान खोजते हैं।

4. सामुदायिक भागीदारी :

शिक्षित समाज पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करता है।

भारत में पर्यावरणीय शिक्षा :

भारत में पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 48(क) में राज्य को पर्यावरण संरक्षण का दायित्व दिया गया है, जबकि अनुच्छेद 51(क) के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बताया गया है कि वह प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करे। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पर्यावरण अध्ययन को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया गया है। राष्ट्रीय हरित अभियान, स्वच्छ भारत अभियान, नमामि गंगे योजना तथा जल संरक्षण अभियान पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने के उपाय :

1. वृक्षारोपण को बढ़ावा :

अधिक से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण को संतुलित बनाया जा सकता है।

2. प्लास्टिक का कम उपयोग :

एकल उपयोग प्लास्टिक पर रोक लगाकर प्रदूषण कम किया जा सकता है।

3. जल संरक्षण :

जल का सीमित और उचित उपयोग करना चाहिए।

4. स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग :

सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा जैव ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना चाहिए।

5. पुनर्चक्रण :

कचरे का पुनर्चक्रण करके संसाधनों की बचत की जा सकती है।

6. जनभागीदारी :

पर्यावरण संरक्षण में जनता की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

विद्यार्थियों की भूमिका :

विद्यार्थी समाज के भविष्य हैं। वे पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। जैसे -

पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना।

जल और बिजली की बचत करना।

प्लास्टिक का उपयोग कम करना।

स्वच्छता अभियान में भाग लेना।

दूसरों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना।

यदि विद्यार्थी छोटी-छोटी आदतों को अपनाएँ, तो बड़े स्तर पर परिवर्तन संभव है।

पर्यावरणीय शिक्षा और सतत विकास :

सतत विकास का अर्थ है वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करना कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े। पर्यावरणीय शिक्षा सतत विकास की आधारशिला है। यह लोगों को संसाधनों के संतुलित उपयोग की प्रेरणा देती है। सतत विकास के लिए आवश्यक है कि आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाया जाए। पर्यावरणीय शिक्षा इस संतुलन को समझने में सहायता करती है।

पर्यावरण संरक्षण में तकनीकी की भूमिका :

आधुनिक तकनीक पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा प्रदूषण कम करने में सहायक हैं।

वर्षा जल संचयन तकनीक जल संरक्षण में उपयोगी है।

अपशिष्ट प्रबंधन तकनीक कचरे को कम करने में मदद करती है।

इलेक्ट्रिक वाहन वायु प्रदूषण को कम करते हैं।

तकनीक का सही उपयोग पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकता है।

पर्यावरणीय शिक्षा के समक्ष चुनौतियाँ :

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, January 2022 Impact Factor: 6.252

1. जागरूकता की कमी :

ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी पर्यावरण के प्रति पर्याप्त जागरूकता नहीं है।

2. संसाधनों की कमी :

विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा हेतु आवश्यक संसाधनों और प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव है।

3. बढ़ती जनसंख्या :

जनसंख्या वृद्धि के कारण संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है।

4. औद्योगिक दबाव :

औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण संरक्षण की नीतियों का पालन कठिन हो जाता है।

निष्कर्ष :

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। यदि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, तभी मानव जीवन सुरक्षित रहेगा। वर्तमान समय में बढ़ती पर्यावरणीय समस्याएँ मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा बन चुकी हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता लोगों को प्रकृति के महत्व को समझाने तथा संरक्षण के लिए प्रेरित करने का सबसे प्रभावी माध्यम है।

हमें यह समझना होगा कि पृथ्वी केवल हमारी नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की भी धरोहर है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण तथा पर्यावरण संतुलन बनाए रखना हमारा नैतिक और सामाजिक दायित्व है। यदि हम आज से ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग हो जाएँ, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण प्रदान किया जा सकता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरणीय शिक्षा ग्रहण करके पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. **ओझा, शिव कुमार एवं ओझा, अर्चना "पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण" सामान्य अध्ययन विशेषांक, पृ०** - 05 - 29

2. **सिंह, दिनेश, "पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण" ज्ञान भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स इलाहाबाद, प्रथम संस्करण**- 2002, **पृ०** - 25 - 49|

3. **ओझा बी. एल. "भारतीय आर्थिक समस्याएं" एस.बी.पी.डी.पब्लिकेशंस आगरा, संस्करण** 2012, **पृ०**- 01 - 10

4. **बर्णवाल, महेश कुमार "भूगोल : एक समग्र अध्ययन" कॉसमॉस पब्लिकेशन, दिल्ली, सातवां परिवर्तित संस्करण - फरवरी,** 2008, **पृ०** - 111- 116 |

5. **सिशोदिया, एम. एस. "भूगोल" उपकर प्रकाशन, आगरा** - 2, **पृ०** - 296 - 304 |

6. **सिंह, सविंद्र "पर्यावरण अध्ययन" प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण** - 1995, **पृ०** - 01 - 50 |

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, January 2022 Impact Factor: 6.252

7. अवस्थी, **एम**. **एन**., "**पर्यावरणीय अध्ययन" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, प्रथम संस्करण** - 2005 - 06, **पृ०** - 01 - 15 **एवं** 273 - 291 |

8. माहेश्वरी, **दीपक**, "**वस्तुनिष्ठ भूगोल**" **प्रतियोगिता साहित्य सीरीज़**, **साहित्य भवन प्रकाशन**, **आगरा**, **पृ०** 33 - 47|

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in